लावा

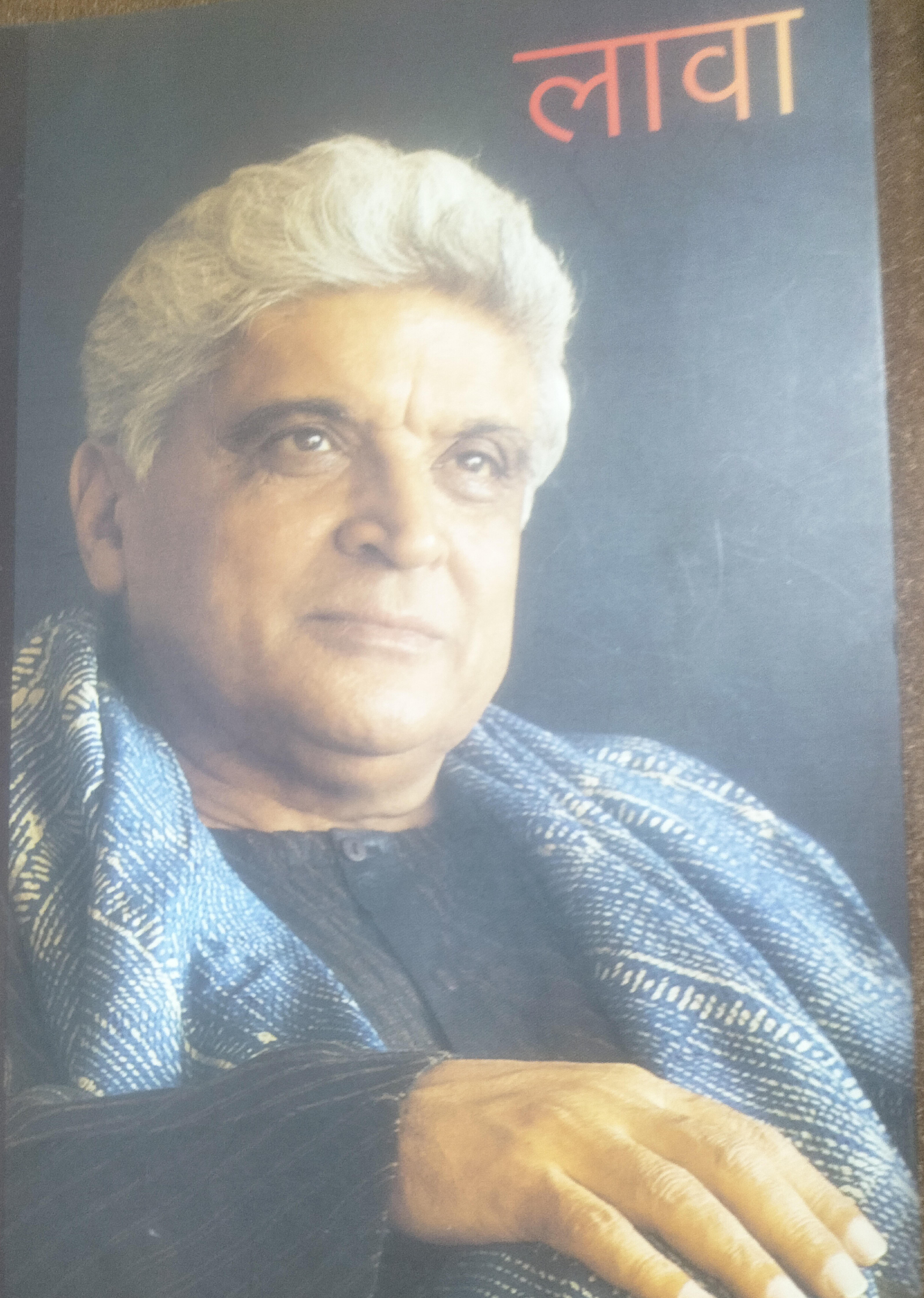

जावेद अख़्तर

104

जावेद अख़्तर

शायर, पटकथाकार और गीतकार जावेद अख़्तर ऐसे गिने-चुने लोगों में हैं जो व्यावसायिक सिनेमा से लेकर शायरी और अदब तक की दुनिया में एक विशेष महत्त्व रखते हैं। भारतीय सिनेमा के इतिहास में जावेद अख़्तर का योगदान *जंजीर, दीवार* और *शोले* जैसी फ़िल्मों के कालातीत महत्त्व से आँका जाता है जिनकी पटकथाएँ उन्होंने सलीम ख़ान के साथ मिलकर लिखी थीं। उर्दू और हिन्दी में प्रकाशित उनके कविता-संग्रह *तरकश* को हर तरह की सफलता मिली है। उन्होंने ऐसे फ़िल्मी गीत लिखे हैं जिनका न केवल अनुकरण किया गया बल्कि उनसे नई परम्परा की शुरुआत भी हुई। आज सिनेमा और साहित्य के क्षेत्र में जावेद अख़्तर अत्यन्त सफल और सम्माननीय व्यक्ति हैं।

पद्म श्री, पद्म भूषण, साहित्य अकादेमी पुरस्कार और पाँच राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों के अलावा अन्य कई महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित जावेद अख़्तर को उनकी धर्मनिरपेक्ष वैचारिकी, स्वतंत्र और दृढ़ आलोचकीय दृष्टि और मानवीय मूल्यों की पक्षधरता के लिए 2020 के प्रतिष्ठित 'रिचर्ड डॉकिंस सम्मान' से भी सम्मानित किया गया है।

R. P. S. SCHOOL
Library
Acc. No.........................
Kachahari Road Bihar Sharif (Nalanda)

लावा

जावेद अख़्तर

राजकमल पेपरबैक्स

उन तस्वीरों, गीतों और यादों के नाम

जिन्हें मेरा दोस्त

फ़रहान मुजीब

अपने पीछे छोड़ गया है

दो इक बातें

"लावा" मेरी ग़ज़लों और नज़्मों का दूसरा संग्रह है। पहला संग्रह "तरकश" 1995 में प्रकाशित हुआ था, इसलिए 'देर आयद दुरुस्त आयद' का पचास फ़ीसदी अर्थात् "देर आयद" तो यक़ीनन ठीक है, रहा "दुरुस्त आयद" तो इसका फ़ैसला तो आपको करना है। मैं तो सिर्फ़ इस देर के लिए कुछ सफ़ाई पेश कर सकता हूँ।

अगर मेरी सुस्ती और आलस्य को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए तो इस देर की एक वजह ये बताई जा सकती है कि मेरे ख़याल में एक के बाद दूसरे संग्रहों का अंबार लगा देना अपने अन्दर, कोई कारनामा नहीं है। मैं समझता हूँ कि अगर अंबार लगे तो नये-नये विचारों का। जिस विचार को रचना का रूप मिल चुका हो, जिस विचार को अभिव्यक्ति मिल चुकी हो, उसे अगर किसी कारण कहने की ज़रूरत महसूस भी हो रही हो, तो कम-से-कम कथन शैली में ही कोई नवीनता, कोई विशिष्टता हो, वर्ना पाठक और श्रोता को अकारण कष्ट क्यों दिया जाए। लेकिन अगर यह नवीनता केवल नयेपन के लिए

है तो कोई लाख समझे कि उसकी शायरी में सुर्ख़ाब के पर लग गए हैं, मगर इन परों में उड़ने की शक्ति नहीं हो सकती कि बात दिल से नहीं निकली है। बात तो जब है कि अक़्ल की पहरेदारी भी मौजूद हो और दिल भी महसूस करे कि उसे तन्हा छोड़ दिया गया है। मैं जानता हूँ कि इसमें असंगति है मगर बेख़ुदी-ओ-हुशयारी, सादगी-ओ-पुरकारी, ये सब एक साथ दरकार हैं।

दरअस्ल शायरी बुद्धि और मन का मिश्रण, विचार और भावनाओं का समन्वय माँगती है। मैंने सच्चे दिल से यही कोशिश की है कि मैं शायरी की ये फ़र्माइश पूरी कर सकूँ। शायद इसीलिए देर लग गई। फिर भी कौन जाने कि ये फ़र्माइश किस हद तक पूरी हो सकी है।

बहरहाल मैं अपने उन सब दोस्तों का आभारी हूँ जिनके सहयोग और जिनकी ज़िद के बग़ैर ये संग्रह शायद टलता ही रहता। जो नाम ख़ास तौर से ज़हन में आ रहे हैं, वो हैं ओबैद आज़म आज़मी, सुहैल अख़्तर वारसी, विनय शुक्ला, मूनिस इजलाल, बाबा आज़मी और अतुल तिवारी।

तो लीजिए, 'लावा' आपके हवाले।

–जावेद अख़्तर

दिसम्बर, 2011

फ़ेहरिस्त

11 ● ज़बान (नज़्म)
13 ● जिधर जाते हैं सब जाना उधर अच्छा नहीं लगता
15 ● कभी कभी मैं ये सोचता हूँ कि मुझको तेरी तलाश क्यों है
17 ● ये खेल क्या है (नज़्म)
21 ● कल जहाँ दीवार थी, है आज इक दर देखिए
23 ● हमने ढूंढे भी तो ढूंढे हैं सहारे कैसे
25 ● आँसू (नज़्म)
29 ● यक़ीन का अगर कोई भी सिलसिला नहीं रहा
31 ● बज़ाहिर क्या है जो हासिल नहीं है
33 ● कायनात (नज़्म)
37 ● जीना मुश्किल है कि आसान ज़रा देख तो लो
39 ● तू किसी पे जाँ को निसार कर दे ....
41 ● एतेराफ़ (नज़्म)
43 ● मिसाल इसकी कहाँ है कोई ज़माने में
45 ● यही हालात इब्तेदा से रहे
47 ● ख़ुदा हाफ़िज़ (नज़्म)
51 ● जब आइना कोई देखो इक अजनबी देखो
53 ● सारी हैरत है मिरी सारी अदा उसकी है
55 ● परस्तार (नज़्म)
59 ● निगल गए सब की सब समुंदर, ज़मीं बची अब कहीं नहीं है
61 ● दर्द अपनाता है पराए कौन
63 ● अजीब क़िस्सा है (नज़्म)
67 ● शुक्र है ख़ैरियत से हूँ साहब

69 • खुला ...
71 • दश्ते-जुनूँ वीरानियाँ.....तन्हा...
75 • दिल (नज़्म)
77 • आरज़ू के मुसाफ़िर
83 • बरसों की रस्मो-राह थी इक रोज़ उसने तोड़ दी
85 • प्यास की कैसे लाए ताब कोई
87 • बरगद (नज़्म)
89 • शबाना (नज़्म)
91 • दस्तबरदार अगर आप ग़ज़ब से हो जाएँ
93 • मैं कब से कितना हूँ तन्हा तुझे पता भी नहीं
95 • कच्ची बस्ती (नज़्म)
99 • एक शायर दोस्त से (नज़्म)
101 • दिल का हर दर्द खो गया जैसे
103 • अभी ज़मीर में थोड़ी-सी जान बाक़ी है
105 • ये मुझसे पूछते हैं चारागर क्यों
107 • ज़िन्दगी की आँधी में ज़हन का शजर तन्हा
109 • वो ज़माना गुज़र गया कब का
111 • ये दुनिया तुमको रास आए तो कहना
113 • बरवक़्त एक और ख़याल (नज़्म)
115 • अजीब आदमी था वो (नज़्म)
119 • आज मैंने अपना फिर सौदा किया
121 • मेले (नज़्म)
125 • मोनताज (नज़्म)
127 • किसलिए कीजे बज़्म-आराई
129 • न ख़ुशी दे तो कुछ दिलासा दे
131 • पन्द्रह अगस्त (नज़्म)
135 • मैं ख़ुद भी कब ये कहता हूँ कोई सबब नहीं
137 • हमसाये के नाम (नज़्म)
139 • हमारे दिल में अब तल्ख़ी नहीं है
141 • याद उसे भी एक अधूरा अफ़साना तो होगा
143 • दर्द कुछ दिन तो मेहमाँ ठहरे
145 • पेड़ से लिपटी बेल (नज़्म)

ग़ज़ल

जिधर जाते हैं सब, जाना उधर अच्छा नहीं लगता
मुझे पामाल[1] रस्तों का सफ़र अच्छा नहीं लगता 1. घिसे-पिटे

ग़लत बातों को ख़ामोशी से सुनना, हामी भर लेना
बहुत हैं फ़ायदे इसमें मगर अच्छा नहीं लगता

मुझे दुश्मन से भी ख़ुद्दारी की उम्मीद रहती है
किसी का भी हो सर, क़दमों में सर अच्छा नहीं लगता

बुलंदी पर इन्हें मिट्टी की ख़ुश्बू तक नहीं आती
ये वो शाख़ें हैं जिनको अब शजर[1] अच्छा नहीं लगता 1. वृक्ष

ये क्यों बाक़ी रहे आतिश-ज़नो[2], ये भी जला डालो 2. आग लगानेवाले
कि सब बेघर हों और मेरा हो घर, अच्छा नहीं लगता

●●●

इक ग़म है जो गूँगा है और चेहरा-चेहरा फिरता है
देखें इस ग़म को मिलती है लफ़्ज़ों की ख़ैरात कहाँ

ग़ज़ल

कभी-कभी मैं ये सोचता हूँ कि मुझको तेरी तलाश क्यों है
कि जब हैं सारे ही तार टूटे तो साज़ में इरतेआश[1] क्यों है — 1. कंपन

कोई अगर पूछता ये हमसे, बताते हम गर तो क्या बताते
भला हो सब का कि ये न पूछा कि दिल पे ऐसी ख़राश क्यों है

उठाके हाथों से तुमने छोड़ा, चलो न दानिस्ता[2] तुमने तोड़ा — 2. जान बूझकर
अब उल्टा हमसे तो ये न पूछो कि शीशा ये पाश-पाश[3] क्यों है — 3. चूर-चूर

अजब दोराहे पे ज़िंदगी है कभी हवस दिल को खींचती है
कभी ये शर्मिंदगी है दिल में कि इतनी फ़िक्रे-मआश[1] क्यों है

1. आजीविका की चिंता

न फ़िक्र कोई न जुस्तुजू[2] है, न ख़्वाब कोई न आरज़ू है
ये शख़्स तो कब का मर चुका है, तो बेकफ़न फिर ये लाश क्यों है

2. खोज

• • •

आराम-दह मकाँ था मकीं बातमीज़[1] थे
बस खिड़कियों के पर्दे बहुत ही दबीज़[2] थे

1. सभ्य
2. मोटा

ये खेल क्या है

मिरे मुख़ालिफ़ ने चाल चल दी है
और अब
मेरी चाल के इंतेज़ार में है
मगर मैं कब से
सफ़ेद ख़ानों
सियाह ख़ानों में रक्खे
काले-सफ़ेद मोहरों को देखता हूँ
मैं सोचता हूँ
ये मोहरे क्या हैं

अगर मैं समझूँ
कि ये जो मोहरे हैं
सिर्फ़ लकड़ी के हैं खिलौने
तो जीतना क्या है हारना क्या
न ये ज़रूरी
न वो अहम है
अगर ख़ुशी है न जीतने की
न हारने का ही कोई ग़म है

तो खेल क्या है
मैं सोचता हूँ
जो खेलना है
तो अपने दिल में यक़ीन कर लूँ
ये मोहरे सचमुच के बादशाहो-वज़ीर
सचमुच के हैं प्यादे
और इनके आगे है
दुश्मनों की वो फ़ौज
रखती है जो कि मुझको तबाह करने के
सारे मनसूबे
सब इरादे
मगर मैं ऐसा जो मान भी लूँ
तो सोचता हूँ
ये खेल कब है
ये जंग है जिसको जीतना है
ये जंग है जिसमें सब है जायज़
कोई ये कहता है जैसे मुझसे
ये जंग भी है
ये खेल भी है
ये जंग है पर खिलाड़ियों की
ये खेल है जंग की तरह का
मैं सोचता हूँ
जो खेल है
इसमें इस तरह का उसूल क्यों है
कि कोई मोहरा रहे कि जाए
मगर जो है बादशाह
उसपर कभी कोई आँच भी न आए

वज़ीर ही को है बस इजाज़त
कि जिस तरफ़ भी वो चाहे जाए

मैं सोचता हूँ
जो खेल है
इसमें इस तरह का उसूल क्यों है
प्यादा जो अपने घर से निकले
पलट के वापस न जाने पाए
मैं सोचता हूँ
अगर यही है उसूल
तो फिर उसूल क्या है
अगर यही है ये खेल
तो फिर ये खेल क्या है
मैं इन सवालों से जाने कब से उलझ रहा हूँ
मिरे मुख़ालिफ़ ने चाल चल दी है
और अब मेरी चाल के इंतेज़ार में है।

• • •

जब जल रहा था शहर तो सुर्ख़[1] आस्मान था 1. लाल
मैं क्या कहूँ थी कैसी क़यामत की रौशनी

ग़ज़ल

कल जहाँ दीवार थी, है आज इक दर देखिए
क्या समाई थी भला दीवाने के सर, देखिए

पुर-सुकूँ[1] लगती है कितनी झील के पानी पे बत[2]
पैरों की बेताबियाँ पानी के अंदर देखिए

1. शांतिमय
2. हंस

छोड़कर जिसको गए थे आप कोई और था
अब मैं कोई और हूँ वापस तो आकर देखिए

छोटे-से घर में थे देखे ख़्वाब महलों के कभी
और अब महलों में हैं तो ख़्वाब में घर देखिए

ज़ह्ने-इंसानी[1] इधर, आफ़ाक़[2] की वुसअ़त[3] उधर
एक मंज़र है यहाँ अंदर कि बाहर देखिए

1. मानव का [illegible]
2. अंतरिक्ष
3. विस्तार

अक़्ल ये कहती है दुनिया मिलती है बाज़ार में
दिल मगर ये कहता है कुछ और बेहतर देखिए

•••

आने न देते थे कभी हम दिल में आरज़ू
पर क्या करें कि लेके तेरा नाम आ गई

ग़ज़ल

हमने ढूँढे भी तो ढूँढे हैं सहारे कैसे
इन सराबों[1] पे कोई उम्र गुज़ारे कैसे

हाथ को हाथ नहीं सूझे, वो तारीकी[2] थी
आ गए हाथ में क्या जाने सितारे कैसे

हर तरफ़ शोर उसी नाम का है दुनिया में
कोई उसको जो पुकारे तो पुकारे कैसे

1. मृगतृष्णा
2. अंधकार

दिल बुझा जितने थे अरमान सभी ख़ाक हुए
राख में फिर ये चमकते हैं शरारे[1] कैसे

1. चिंगारी

न तो दम लेती है तू और न हवा थमती है
ज़िन्दगी ज़ुल्फ़ तिरी कोई सँवारे कैसे

●●●

इन दिनों नाउमीद रहता हूँ
शायद उसने भी ये सुना होगा

ये आँसू
क्या मैं ये समझूँ
पहले कहीं नहीं था
मुझे तो शक है कि ये कहीं था
ये मेरे दिल और मेरी पलकों के दरमियाँ
इक जो फ़ासला है
जहाँ ख़यालों के शहर ज़िन्दा हैं
और ख़्वाबों की तुर्बतें[1] हैं
जहाँ मुहब्बत के उजड़े बाग़ों में
तल्ख़ियों के बबूल हैं
और कुछ नहीं है
जहाँ से आगे हैं
उलझनों के घनेरे जंगल

ये आँसू
शायद बहुत दिनों से
वहीं छिपा था
जिन्होंने इसको जनम दिया था
वो रंज[2] तो मसलेहत[3] के हाथों
न ज़ाने कब क़त्ल हो गए थे
तो करता फिर किसपे नाज़ आँसू
कि हो गया बेजवाज़[4] आँसू
यतीम[5] आँसू, यसीर[6] आँसू
न मोतबर[7] था
न रास्तों से ही बाख़बर था
तो चलते चलते
वो थम गया था

1. क़ब्रें
2. दुःख, 3. नीति
4. अकारण
5. अनाथ
6. लावारिस
7. विश्वस्त

ठिठक गया था
झिझक गया था

इधर से आज इक किसी के ग़म की
कहानी का कारवाँ जो गुज़रा
यतीम आँसू ने जैसे जाना
कि इस कहानी की सरपरस्ती मिले
तो मुम्किन है
राह पाना
तो इक कहानी की उँगली थामे
उसी के ग़म को रुमाल करता
उसी के बारे में
झूठे-सच्चे सवाल करता
ये मेरी पलकों तक आ गया है।

●●●

मेरा तो अब ये आलम है, अक्सर ऐसा होता है
याद करूँ तो याद नहीं आता, घर कैसा होता है

ग़ज़ल

यक़ीन का अगर कोई भी सिलसिला नहीं रहा
तो शुक्र कीजिए, कि अब कोई गिला नहीं रहा

न हिज्र[1] है न वस्ल[2] है अब इसको कोई क्या कहे
कि फूल शाख़ पर तो है मगर खिला नहीं रहा

1. जुदाई
2. मिलन

ख़ज़ाने तुमने पाए तो ग़रीब जैसे हो गए
पलक पे अब कोई भी मोती झिलमिला नहीं रहा

बदल गई है ज़िंदगी, बदल गए हैं लोग भी
ख़ुलूस[1] का जो था कभी वो अब सिला[2] नहीं रहा

1. स्नेह
2. प्रतिफल

जो दुश्मनी बख़ील[3] से हुई तो इतनी ख़ैर है
कि ज़हर उस के पास है मगर पिला नहीं रहा

3. कंजूस

लहू में जज़्ब[4] हो सका न इल्म तो ये हाल है
कोई सवाल ज़हन को जो दे जिला[5], नहीं रहा

4. सोख
5. चमक

●●●

ग़ज़ल

बज़ाहिर[1] क्या है जो हासिल[2] नहीं है
मगर ये तो मिरी मंज़िल नहीं है

क़

ये तोदा रेत का है, बीच दरिया
ये बह जाएगा ये साहिल नहीं है

बहुत आसान है पहचान इसकी
अगर दुखता नहीं तो दिल नहीं है

1. देखने में
2. प्राप्त

मुसाफ़िर वो अजब है कारवाँ में
कि जो हमराह है शामिल नहीं है

बस इक मक़्तूल[1] ही मक़्तूल कब है
बस इक क़ातिल ही तो क़ातिल नहीं है

कभी तो रात को तुम रात कह दो
ये काम इतना भी अब मुश्किल नहीं है

1. हत

●●●

तुम बैठे हो लेकिन जाते देख रहा हूँ
मैं तन्हाई के दिन आते देख रहा हूँ

कायनात[1]

1. ब्रह्मांड

मैं कितनी सदियों से तक रहा हूँ
ये कायनात और इसकी वुस्अत[2]
तमाम हैरत तमाम हैरत
ये क्या तमाशा ये क्या समाँ है
ये क्या अयाँ[3] है ये क्या निहाँ[4] है
अथाह सागर है इक ख़ला[5] का
न जाने कब से न जाने कब तक
कहाँ तलक है
हमारी नज़रों की इन्तहा[6] है
जिसे समझते हैं हम फ़लक[7] है

2. विस्तार
3. स्पष्ट, 4. गुप्त
5. अंतरिक्ष
6. सीमा
7. आकाश

ये रात का छलनी-छलनी-सा काला आस्माँ है
कि जिसमें जुगनू की शक्ल में
बेशुमार सूरज पिघल रहे हैं
शहाबे-साक़िब[8] हैं
या हमेशा की ठंडी-काली फ़िज़ाओं[9] में
जैसे आग के तीर चल रहे हैं
करोड़हा नूरी[10] बरसों के फ़ासलों में फैली

8. उल्का
9. वातावरण
10. प्रकाश वर्ष

ये कहकशाएँ[1]
ख़ला को घेरे हैं
या ख़लाओं की क़ैद में हैं
ये कौन किसको लिए चला है
हर एक लम्हा
करोड़ों मीलों की जो मुसाफ़त[2] है
इनको आख़िर कहाँ है जाना
अगर है इनका कहीं कोई आख़िरी ठिकाना
तो वो कहाँ है

जहाँ कहीं है
सवाल ये है
वहाँ से आगे कोई ज़मीं है
कोई फ़लक है
अगर नहीं है
तो ये 'नहीं' कितनी दूर तक है

मैं कितनी सदियों से तक रहा हूँ
ये कायनात और इसकी वुस्अत
तमाम हैरत तमाम हैरत
सितारे जिनकी सफ़ीर[3] किरनें
करोड़ों बरसों से राह में हैं
ज़मीं से मिलने की चाह में हैं
कभी तो आके करेंगी ये मेरी आँखें रौशन
कभी तो आएगा मेरे हाथों में रौशनी का एक ऐसा दामन
कि जिसको थामे मैं जाके देखूंगा इन ख़लाओं के

1. आकाश गंगा
2. यात्रा, दूरी
3. दूत

फैले आँगन
कभी तो मुझको ये कायनात अपने राज़ खुलके
सुना ही देगी
ये अपना आग़ाज़ अपना अंजाम
मुझको इक दिन बता ही देगी

अगर कोई वाइज़[1] अपने मिम्बर[2] से
नख़वत-आमेज़ लहजे[3] में ये कहे
कि तुम तो कभी समझ ही नहीं सकोगे
कि इस क़दर है ये बात गहरी
तो कोई पूछे
जो मैं न समझा
तो कौन समझेगा
और जिसको कभी न कोई समझ सके
ऐसी बात तो फिर फ़ुज़ूल[4] ठहरी।

1. उपदेशक
2. व्यास पीठ
3. अहंकार भरे स्वर
4. व्यर्थ

●●●

मिरी शनाख़्त मिरी इन्फ़िरादियत[1], आवाज़
बुरा अगर नहीं मानें हुज़ूर, अब भी है

1. एकत्व

ग़ज़ल

जीना मुश्किल है कि आसान ज़रा देख तो लो
लोग लगते हैं परेशान ज़रा देख तो लो

फिर मुक़र्रिर[1] कोई सरगर्म[2] सरे-मिम्बर[3] है
किसके है क़त्ल का सामान ज़रा देख तो लो

1. वक्ता, 2. सक्रिय
3. व्यासपीठ पर

ये नया शहर तो है ख़ूब बसाया तुमने
क्यों पुराना हुआ वीरान ज़रा देख तो लो

इन चिराग़ों के तले ऐसे अँधेरे क्यों हैं
तुम भी रह जाओगे हैरान ज़रा देख तो लो

तुम ये कहते हो कि मैं ग़ैर हूँ फिर भी शायद
निकल आए कोई पहचान ज़रा देख तो लो

ये सताइश[1] की तमन्ना ये सिले[2] की परवाह
कहाँ लाए हैं ये अरमान ज़रा देख तो लो

1. प्रशंसा
2. प्रतिफल

•••

ग़ज़ल

तू किसी पे जाँ को निसार[1] कर दे कि दिल को क़दमों में डाल दे 1. न्योछावर
कोई होगा तेरा यहाँ कभी ये ख़याल दिल से निकाल दे

मिरे हुक्मराँ[2] भी अजीब हैं कि जवाब लेके वो आए हैं 2. शासक
मुझे हुक्म है कि जवाब का हमें सीधा-सीधा सवाल दे

रगो-पै[3] में जम गया सर्द ख़ूँ न मैं चल सकूँ न मैं हिल सकूँ 3. नस-नस
मिरे ग़म की धूप को तेज़ कर, मिरे ख़ून को तू उबाल दे

वो जो मुस्कुरा के मिला कभी तो ये फ़िक्र जैसे मुझे हुई
कहूँ अपने दिल का जो मुद्दआ[1], कहीं मुस्कुरा के न टाल दे

1. इच्छा

ये जो ज़ह्न[2] दिन की है रौशनी तो ये दिल है रात में चाँदनी
मुझे ख़्वाब उतने ही चाहिएं ये ज़माना जितने ख़याल दे

2. मस्तिष्क

●●●

अब तक ज़िन्दा रहने की तरकीब न आई
तुम आख़िर किस दुनिया में रहते हो भाई

एतेराफ़[1]

1. स्वीकारोक्ति

सच तो ये है कुसूर अपना है
चाँद को छूने की तमन्ना की
आस्मां को ज़मीन पर माँगा
फूल चाहा कि पत्थरों पे खिले
काँटों में की तलाश ख़ुशबू की
आग से माँगते रहे ठंडक
ख़्वाब जो देखा
चाहा सच हो जाए
इसकी हमको सज़ा तो मिलनी थी ।

●●●

R. P. S. SCHOOL
Library
Acc. No.
Kachahari Road, (Nalanda)

ग़ज़ल

मिसाल[1] इसकी कहाँ है कोई ज़माने में
कि सारे खोने के ग़म पाए हमने पाने में

वो शक्ल पिघली तो हर शय में ढल गई जैसे
अजीब बात हुई है उसे भुलाने में

जो मुंतज़िर न मिला वो तो हम हैं शर्मिंदा
कि हमने देर लगा दी पलटके आने में

1. उदाहरण

ग़ज़ल

यही हालात इब्तेदा[1] से रहे
लोग हमसे ख़फ़ा-ख़फ़ा-से रहे

1. प्रारम्भ

इन चिराग़ों में तेल ही कम था
क्यों गिला हमको फिर हवा से रहे

बहस, शतरंज, शे'र, मौसीक़ी[2]
तुम नहीं थे तो ये दिलासे रहे

2. संगीत

ख़ुदा हाफ़िज़

मुझे वो धुंध में लिपटी हुई
मासूम[1] सदियाँ याद आती हैं
कि जब तुम हर जगह थे
हर तरफ़ थे
हर कहीं थे तुम
रिहाइश[2] थी तुम्हारी आस्मानों में
ज़मीं के भी मकीं[3] थे तुम
तुम्हीं थे चाँद और सूरज के मुल्कों में
तुम्हीं तारों की नगरी में
हवाओं में
फ़िज़ाओं [4] में
दिशाओं में
सुलगती धूप में तुम थे
तुम्हीं थे ठंडी छाँवों में
तुम्हीं खेतों में उगते थे
तुम्हीं पेड़ों पे फलते थे
तुम्हीं बारिश की बूँदों में
तुम्हीं सारी घटाओं में

1. भोली-भाली
2. निवास
3. निवासी
4. वातावरण

न अब तुम हो वबाओं में
न अब तुम हो घटाओं में
न बिच्छू में न तो अब नाग में तुम हो
न आँधी और तूफ़ाँ
और न तो पाकीज़ा नदियों
और मुक़द्दस[1] आग में तुम हो

अदब[2] है शर्त
बस इतना कहूँगा
तुमने शायद मुझ पे है ये मेहरबानी की
मैं अपने इल्म की मश्अल[3] लिए
पहुँचा जहाँ हूँ
मैंने देखा
तुमने है नक़्ले-मकानी[4] की
मगर अब भी ख़ला[5] की वुस्अतों[6] में
तुम ही रहते हो
जिसे कहते हैं क़िस्मत
अस्ल में
हालात का बिफरा समुंदर है
मगर अब तक यक़ीने-आम है
बनके समुंदर
तुम ही बहते हो

मुझे ये मानना होगा
वहाँ तुम हो
जहाँ ये राज़ है पिन्हाँ[7]
कि ऐसी कायनाते-बेकराँ[8] की इब्तेदा[9]

1. पवित्र
2. आदर
3. मशाल
4. स्थानांतरण
5. अंतरिक्ष
6. विस्तार
7. छिपा हुआ
8. असीम बृहमांड
9. प्रारम्भ

ग़ज़ल

जब आइना कोई देखो इक अजनबी देखो
कहाँ पे लाई है तुमको ये ज़िंदगी देखो

मुहब्बतों में कहाँ अपने वास्ते फ़ुर्सत
जिसे भी चाहो वो चाहे मिरी ख़ुशी देखो

जो हो सके तो ज़्यादा ही चाहना मुझको
कभी जो मेरी मुहब्बत में कुछ कमी देखो

इक मुहब्बत की ये तस्वीर है दो रंगों में
शौक़ सब मेरा है और सारी हया[1] उसकी है

हमने क्या उससे मुहब्बत की इजाज़त ली थी
दिल-शिकन[2] ही सही, पर बात बजा उसकी है

एक मेरे ही सिवा सबको पुकारे है कोई
मैंने पहले ही कहा था ये सदा उसकी है

ख़ून से सींची है मैंने जो ज़मीं मर-मर के
वो ज़मीं, एक सितमगर ने कहा, उसकी है

क़

उसने ही इसको उजाड़ा है इसे लूटा है
ये ज़मीं उसकी अगर है भी तो क्या उसकी है

• • •

1. शर्म
2. हृदयविदारक

परस्तार[1]

1. भक्त

वो जो कहलाता था दीवाना तिरा
वो जिसे हिफ़्ज़[2] था अफ़्साना तिरा
जिसकी दीवारों पे आवेज़ाँ[3] थीं
तस्वीरें तिरी
वो जो दोहराता था
तक़रीरें[4] तिरी
वो जो ख़ुश था तिरी ख़ुशियों से
तिरे ग़म से उदास
दूर रहके जो समझता था
वो है तेरे पास
वो जिसे सज्दा तुझे करने से
इन्कार न था
उसको दरअस्ल कभी तुझसे
कोई प्यार न था
उसकी मुश्किल थी
कि दुश्वार[5] थे उसके रस्ते
जिनपे बेख़ौफ़ो-ख़तर[6]

2. कंठस्थ
3. टँगी हुई
4. भाषण
5. कठिन
6. निर्भय

घूमते रहज़न[1] थे
सदा उसकी अना[2] के दरपै[3]
उसने घबराके
सब अपनी अना की दौलत
तेरी तहवील[4] में रखवा दी थी
अपनी ज़िल्लत[5] को वो दुनिया की नज़र
और अपनी भी निगाहों से छिपाने के लिए
कामयाबी को तिरी
तेरी फ़ुतूहात[6]
तिरी इज़्ज़त को
वो तिरे नाम तिरी शोहरत[7] को
अपने होने का सबब[8] जानता था
है वजूद उसका जुदा तुझसे
ये कब मानता था
वो मगर
पुरख़तर[9] रास्तों से आज निकल आया है
वक़्त ने तेरे बराबर न सही
कुछ न कुछ अपना करम उसपे भी फ़रमाया है
अब उसे तेरी ज़रूरत ही नहीं
जिसका दावा था कभी
अब वो अक़ीदत[10] ही नहीं
तेरी तहवील में जो रक्खी थी कल
उसने अना
आज वो माँग रहा है वापस
बात इतनी-सी है

1. लुटेरे
2. अहं, 3. घात में
4. सुरक्षा
5. बेइज़्ज़ती
6. जीत
7. प्रसिद्धि
8. कारण
9. ख़तरनाक
10. श्रद्धा

ऐ साहिबे-नामो-शोहरत[1]
जिसको कल
तेरे ख़ुदा होने से इन्कार न था
वो कभी तेरा परस्तार न था।

1. प्रतिष्ठित

●●●

सबका ख़ुशी से फ़ासिला एक क़दम है
हर घर में बस एक ही कमरा कम है

ख़ुश भी हूँ डरता भी हूँ, मुझको ख़ुशियाँ
दुश्मन की भेजी सौग़ातें लगती हैं

ग़ज़ल

निगल गए सब की सब समुंदर, ज़मीं बची अब कहीं नहीं है
बचाते हम अपनी जान जिसमें वो कश्ती भी अब कहीं नहीं है

बहुत दिनों बाद पाई फ़ुर्सत तो मैंने ख़ुद को पलटके देखा
मगर मैं पहचानता था जिसको वो आदमी अब कहीं नहीं है

गुज़र गया वक़्त दिल पे लिखकर न जाने कैसी अजीब बातें
वरक़[1] पलटता हूँ मैं जो दिल के तो सादगी अब कहीं नहीं है

1. पृष्ठ

वो आग बरसी है दोपहर में कि सारे मंज़र[1] झुलस गए हैं
यहाँ सवेरे जो ताज़गी थी वो ताज़गी अब कहीं नहीं है

1. दृश्य

तुम अपने क़स्बों में जाके देखो वहाँ भी अब शहर ही बसे हैं
कि ढूँढते हो जो ज़िंदगी तुम वो ज़िंदगी अब कहीं नहीं है

●●●

अब अपना कोई दोस्त कोई यार नहीं है
हैं जिसकी तरफ़, वो भी तरफ़दार नहीं है

ग़ज़ल

दर्द अपनाता है पराए कौन
कौन सुनता है और सुनाए कौन

कौन दोहराए फिर वही बातें
ग़म अभी सोया है, जगाए कौन

अब सुकूँ[1] है तो भूलने में है
लेकिन उस शख़्स को भुलाए कौन

1. चैन

वो जो अपने हैं क्या वो अपने हैं
कौन दुख झेले, आज़माए कौन

आज फिर दिल है कुछ उदास-उदास
देखिए आज याद आए कौन

●●●

तुम बिन हम सुख क्या पाते दुख भी न मिला जी भरके
अब तक है वही बेचैनी और दर्द है पहले से कम

अजीब क़िस्सा है

अजीब क़िस्सा है
जब ये दुनिया समझ रही थी
तुम अपनी दुनिया में जी रही हो
मैं अपनी दुनिया में जी रहा हूँ
तो हमने सारी निगाहों से दूर
एक दुनिया बसाई थी
जो कि मेरी भी थी
तुम्हारी भी थी
जहाँ फ़िज़ाओं में
दोनों के ख़्वाब जागते थे
जहाँ हवाओं में
दोनों की सरगोशियाँ[1] घुली थीं
जहाँ के फूलों में
दोनों की आरज़ू के सब रंग
खिल रहे थे
जहाँ पे दोनों की जुरअतों[2] के
हज़ार चश्मे[3] उबल रहे थे

1. हौले से कही बातें
2. साहस
3. धारे

न वसवसे[1] थे न रंजो-ग़म[2] थे
सुकून का गहरा इक समुंदर था
और हम थे

अजीब क़िस्सा है
सारी दुनिया ने
जब ये जाना
कि हमने सारी निगाहों से दूर
एक दुनिया बसाई है तो
हर एक अबरू[3] ने जैसे हम पर कमान तानी
तमाम पेशानियों[4] पे उभरीं
ग़म और गुस्से की गहरी शिकनें[5]
किसी के लहजे से तल्ख़ी[6] छलकी
किसी की बातों में तुर्शी[7] आई
किसी ने चाहा
कि कोई दीवार ही उठा दे
किसी ने चाहा
हमारी दुनिया ही वो मिटा दे
मगर ज़माने को हारना था
ज़माना हारा
ये सारी दुनिया को मानना ही पड़ा
हमारे ख़याल की एक-सी ज़मीं है
हमारे ख़्वाबों का एक जैसा ही आस्माँ है
मगर पुरानी ये दास्ताँ है
कि हमपे दुनिया
अब एक अर्से[8] से मेहरबाँ है

1. आशंका
2. दुख
3. भ्रू, भौं
4. माथा
5. लकीरें
6. कड़वाहट
7. कसीलापन
8. मुद्दत

अजीब क़िस्सा है
जब कि दुनिया ने
कब का तस्लीम[1] कर लिया है
हम एक दुनिया के रहने वाले हैं
सच तो ये है
तुम अपनी दुनिया में जी रही हो
मैं अपनी दुनिया में जी रहा हूँ।

1. स्वीकार

●●●

तुम्हें भी याद नहीं और मैं भी भूल गया
वो लम्हा कितना हसीं था मगर फ़ुज़ूल गया

जो बाल[1] आ जाए शीशे में तो शीशा तोड़ देते हैं
जिसे छोड़ें उसे हम उम्रभर को छोड़ देते हैं

1. दरार

ग़ज़ल

शुक्र है ख़ैरियत से हूँ साहब
आपसे और क्या कहूँ साहब

अब समझने लगा हूँ सूदो-ज़ियाँ[1]
अब कहाँ मुझमें वो जुनूँ[2] साहब

ज़िल्लते-ज़ीस्त[3] या शिकस्ते-ज़मीर[4]
ये सहूँ मैं कि वो सहूँ साहब

1. लाभ-हानि
2. उन्माद
3. अपमानमय जीवन
4. अंतरात्मा की पराजय

हम तुम्हें याद करते, रो लेते
दो घड़ी मिलता जो सुकूँ साहब

शाम भी ढल रही है घर भी है दूर
कितनी देर और मैं रुकूँ साहब

अब झुकूँगा तो टूट जाऊँगा
कैसे अब और मैं झुकूँ साहब

कुछ रिवायात[1] की गवाही पर
कितना जुर्माना मैं भरूँ साहब

1. प्रचलित कथाएँ

●●●

ग़ज़ल

ख़ुला है दर प तिरा इंतेज़ार जाता रहा
ख़ुलूस[1] तो है मगर एतेबार जाता रहा

किसी की आँख में मस्ती तो आज भी है वही
मगर कभी जो हमें था ख़ुमार[2], जाता रहा

कभी जो सीने में एक आग थी वो सर्द हुई
कभी निगाह में जो था शरार[3] जाता रहा

1. प्रेम
2. नशा
3. चिंगारी

अजब-सा चैन था हमको कि जब थे हम बेचैन
क़रार[1] आया तो जैसे क़रार जाता रहा

1. चैन

कभी तो मेरी भी सुनवाई होगी महफ़िल में
मैं ये उम्मीद लिए बार-बार जाता रहा

●●●

अक्सर वो कहते हैं वो बस मेरे हैं
अक्सर क्यों कहते हैं, हैरत होती है

ग़ज़ल

दश्ते-जुनूँ[1] वीरानियाँ, क़हते-सुकूँ[2] हैरानियाँ, इक दिल और उसकी
बे-सरो-सामानियाँ[3], अज़ ख़ाकदाँ ता आस्माँ[4], तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ

चेहरा ज़मीं का ज़र्द[5] है, लहजा हवा का सर्द है, पहने फ़िज़ाएँ हैं कफ़न
या गर्द[6] है, मातम-कुनाँ[7] है ये समाँ, तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ

सब हमसफ़र अब खो चुके, हम हाथ सबसे धो चुके, हम सबको कब का रो चुके,
उम्मीद हसरत आरज़ू जितने फ़रोज़ाँ[8] थे यहाँ गुल[9] सब चिराग़ अब हो चुके

अब एक लम्बी रात है, अब एक ही तो बात है, अब दिल पे जैसे ग़म का
भारी हाथ है, अब इक यही है दास्ताँ, तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ

1. उन्माद का रेगिस्तान
2. चैन का अकाल
3. कंगाली
4. धरती से आकाश तक
5. फीका या पीला
6. धूल
7. शोक ग्रस्त
8. प्रकाशमान
9. बुझना

अब ये सफ़र दुश्वार[1] है, हर हर क़दम दीवार है, हर लम्हा इक आज़ार[2] है
अब रोज़ो-शब[3], शामो-सहर[4] है वक़्त वो बीमार जो मरने से भी लाचार है

मजबूर होके ज़िंदगी, है साँस रोके ज़िंदगी, है गुंग[5] अब आवाज़
खोके ज़िंदगी, हैं इस ख़मोशी में निहाँ[6] तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ

1. कठिन
2. कष्ट
3. दिन-रात
4. शाम-सवेरा
5. गूंगी
6. छुपी हुई

सहमी हुई हैं ख़्वाहिशें, ठिठकी हुई है काविशें[7], क्या दोस्ती क्या रंजिशें[8],
सब जैसे अब हैं बेअसर बेवाक़िआ-सी[9] ज़िंदगी की हैं अजब ये साज़िशें[10]

जो ग़म थे वो भी खो गए, दिल जैसे ख़ाली हो गए, कल जो थे अपने हमसफ़र
वो तो गए, अब हर तरफ़ हैं हुक्मराँ[11] तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ

7. प्रयत्न
8. मनमुटाव
9. स्थगित
10. षड्यंत्र
11. शासक

ऐ ज़ीस्त[1] ये तू ही बता, ये क्या हुआ कैसे हुआ, क्यों हमने पाई ये सज़ा
अब याद करते हैं अगर तो याद तक आता नहीं देखा था हमने ख़्वाब क्या

क्या साज़ क्या जामो-सुबू[2], रुख़सत[3] हुई हर आरज़ू, चारों पहर लगता है
जैसे चारसू[4], हैं साकितो-जामिद[5] यहाँ तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ-तन्हाइयाँ

1. जीवन
2. मदिरा और प्याला
3. विदा
4. चारों ओर
5. रुकी हुई और जमी हुई

●●●

मुझ को बिखरना था जो ये घेरा नहीं होता
मैं अपना भी न होता जो तेरा नहीं होता

दिल

दिल वो सह्रा[1] था
कि जिस सह्रा में
हसरतें[2]
रेत के टीलों की तरह रहती थीं
जब हवादिस[3] की हवा
उनको मिटाने के लिए
चलती थी
यहाँ मिटती थीं
कहीं और उभर आती थीं
शक्ल खोते ही
नई शक्ल में ढल जाती थीं
दिल के सह्रा पे मगर अब की बार
सानेहा[4] गुज़रा कुछ ऐसा
कि सुनाए न बने
आँधी वो आई कि सारे टीले
ऐसे बिखरे
कि कहीं और उभर ही न सके
यूँ मिटे हैं

1. रेगिस्तान
2. आकांक्षाएँ
3. दुर्घटनाएँ
4. विपत्ति

कि कहाँ और बनाए न घर

अब कहीं
टीले नहीं
रेत नहीं
रेत का ज़र्रा[1] नहीं
दिल में अब कुछ भी नहीं
दिल को सहरा भी अगर कहिए
तो कैसे कहिए।

1. कण

•••

आरज़ू के मुसाफ़िर

जाने किसकी तलाश उनकी आँखों में थी
आरज़ू के मुसाफ़िर
भटकते रहे
जितना भी वो चले
उतने ही बिछ गए
राह में फ़ासले
ख़्वाब मंज़िल थे
और मंज़िलें ख़्वाब थीं
रास्तों से निकलते रहे रास्ते
जाने किस वास्ते
आरज़ू के मुसाफ़िर भटकते रहे

जिनपे सब चलते हैं
ऐसे सब रास्ते छोड़के
एक अंजान पगडंडी की उँगली थामे हुए
इक सितारे से
उम्मीद बाँधे हुए सम्त[1] की
हर गुमाँ[2] को यक़ीं[3] मानके

1. दिशा
2. भ्रम, 3. विश्वास

अपने दिल से
कोई धोखा खाते हुए जानके
सहरा-सहरा
समुंदर को वो ढूँढते
कुछ सराबों[1] की जानिब[2]
रहे गामज़न[3]
यूँ नहीं था
कि उनको ख़बर ही न थी
ये समुंदर नहीं
लेकिन उनको कहीं
शायद एहसास था
ये फ़रेब[4]
उनको महवे-सफ़र[5] रक्खेगा
ये सबब[6] था
कि था और कोई सबब
जो लिए उनको फिरता रहा
मंज़िलों -मंज़िलों
रास्ते-रास्ते
जाने किस वास्ते
आरज़ू के मुसाफ़िर भटकते रहे

अक्सर ऐसा हुआ
शहर-दर-शहर
और बस्ती-बस्ती
किसी भी दरीचे[7] में
कोई चिराग़े-मुहब्बत न था

1. मृगतृष्णा
2. तरफ़
3. अग्रसर
4. धोखा
5. यात्रा में व्यस्त
6. कारण
7. झरोखा

बेरुख़ी[1] से भरी
सारी गलियों में
सारे मकानों के
दरवाज़े यूँ बंद थे
जैसे इक सर्द
ख़ामोश लहजे में
वो कह रहे हों
मुरव्वत[2] का और मेहरबानी का मस्कन[3]
कहीं और होगा
यहाँ तो नहीं है
यही एक मंज़र[4] समेटे थे
शहरों के पथरीले सब रास्ते
जाने किस वास्ते
आरज़ू के मुसाफ़िर भटकते रहे

और कभी यूँ हुआ
आरज़ू के मुसाफ़िर थे
जलती-सुलगती हुई धूप में
कुछ दरख़्तों ने साये बिछाए मगर
उनको ऐसा लगा
साये में जो सुकून
और आराम है
मंज़िलों तक पहुँचने न देगा उन्हें
और यूँ भी हुआ
महकी कलियों ने ख़ुश्बू के पैग़ाम[5] भेजे उन्हें
उनको ऐसा लगा
चंद कलियों पे कैसे क़नाअत[6] करें

1. उपेक्षा
2. शालीनता
3. आवास
4. दृश्य
5. संदेश
6. संतुष्टि

उनको तो ढूँढना है
वो गुलशन कि जिसको
किसी ने अभी तक है देखा नहीं
जाने क्यों था उन्हें इसका पूरा यक़ीं
देर हो या सवेर उनको लेकिन कहीं
ऐसे गुलशन[1] के मिल जाएँगे रास्ते
जाने किस वास्ते
आरज़ू के मुसाफ़िर भटकते रहे

धूप ढलने लगी
बस ज़रा देर में रात हो जाएगी
आरज़ू के मुसाफ़िर जो हैं
उनके क़दमों तले
जो भी इक राह है
वो भी शायद अँधेरे में खो जाएगी
आरज़ू के मुसाफ़िर भी
अपने थके-हारे बेजान पैरों पे
कुछ देर तक लड़खड़ाएँगे
और गिरके सो जाएँगे
सिर्फ़ सन्नाटा सोचेगा ये रातभर
मंज़िलें तो इन्हें जाने कितनी मिलीं
ये मगर
मंज़िलों को समझते रहे जाने क्यों रास्ते
जाने किस वास्ते
आरज़ू के मुसाफ़िर भटकते रहे

1. उद्यान

और फिर इक सवेरे की उजली किरन
तीरगी[1] चीर के
जगमगा देगी
जब अनगिनत रहगुज़ारों[2] पे बिखरे हुए
उनके नक़्शे-क़दम[3]
आफ़ियतगाहों[4] में रहनेवाले
ये हैरत से मजबूर होके कहेंगे
ये नक़्शे-क़दम सिर्फ़ नक़्शे-क़दम ही नहीं
ये तो दरयाफ़्त[5] हैं
ये तो ईजाद[6] हैं
ये तो अफ़्कार[7] हैं
ये तो अश्आर[8] हैं
ये कोई रक़्स[9] हैं
ये कोई राग हैं
इनसे ही तो हैं आरास्ता[10]
सारी तहज़ीबो-तारीख़[11] के
वक़्त के
ज़िंदगी के सभी रास्ते

वो मुसाफ़िर मगर
जानते-बूझते भी रहे बेख़बर
जिसको छू लें क़दम
वो तो बस राह थी
उनकी मंज़िल दिगर[12] थी
अलग चाह थी
जो नहीं मिल सके उसकी थी आरज़ू

1. अंधकार
2. रास्ते
3. पद चिन्ह
4. सुखी घरों
5. खोज
6. आविष्कार
7. विचार धाराएँ
8. शे'र का बहु.
9. नृत्य
10. सजे हुए
11. संस्कृति और इतिहास
12. अलग

जो नहीं है कहीं उसकी थी जुस्तजू[1]
शायद इस वास्ते
आरज़ू के मुसाफ़िर भटकते रहे।

1. तलाश

●●●

इश्क़ की बातें ख़्वाब की बातें लगती हैं
अब सब रातें सूनी रातें लगती हैं

ग़ज़ल

बरसों की रस्मो-राह[1] थी इक रोज़ उसने तोड़ दी
हुशियार हम भी कम नहीं, उम्मीद हमने छोड़ दी

गिरहें[2] पड़ी हैं किस तरह, ये बात है कुछ इस तरह
वो डोर टूटी बारहा[3], हर बार हमने जोड़ दी

उसने कहा कैसे हो तुम, बस मैंने लब[4] खोले ही थे
और बात दुनिया की तरफ़ जल्दी-से उसने मोड़ दी

1. संबंध
2. गांठ
3. बार-बार
4. होंठ

वो चाहता है सब कहें, सरकार तो बेऐब[1] हैं
जो देख पाए ऐब वो हर आँख उसने फोड़ दी

थोड़ी-सी पाई थी ख़ुशी तो सो गई थी ज़िंदगी
ऐ दर्द तेरा शुक्रिया, जो इस तरह झंझोड़ दी

1. निर्विकार

●●●

इस नगरी में क्यों मिलती है रोटी सपनों के बदले
जिनकी नगरी है वो जानें हम ठहरे बनजारे लोग

ग़ज़ल

प्यास की कैसे लाए ताब[1] कोई
नहीं दरिया तो हो सराब[2] कोई

ज़ख़्म दिल में जहाँ महकता है
इसी क्यारी में था गुलाब कोई

रात बजती थी दूर शहनाई
रोया पीकर बहुत शराब कोई

1. सहनशक्ति
2. मृगतृष्णा

दिल को घेरे हैं रोज़गार के ग़म
रद्दी में खो गई किताब कोई

कौन-सा ज़ख़्म किसने बख़्शा[1] है
इसका रक्खे कहाँ हिसाब कोई

फिर मैं सुनने लगा हूँ इस दिल की
आनेवाला है फिर अज़ाब[2] कोई

शब की दहलीज़[3] पर शफ़क़[4] है लहू
फिर हुआ क़त्ल आफ़ताब[5] कोई

1. प्रदान करना
2. संकट
3. चौखट
4. क्षितिज की लालिमा
5. सूरज

●●●

बरगद

मेरे रस्ते में इक मोड़ था
और उस मोड़ पर
पेड़ था एक बरगद का
ऊँचा
घना
जिसके साए में मेरा बहुत वक़्त बीता है
लेकिन हमेशा यही मैंने सोचा
कि रस्ते में ये मोड़ ही इसलिए है
कि ये पेड़ है
उम्र की आँधियों में
वो पेड़ एक दिन गिर गया
मोड़ लेकिन है अब तक वहीं का वहीं

देखता हूँ तो
आगे भी रस्ते में
बस मोड़ ही मोड़ हैं
पेड़ कोई नहीं

रास्तों में मुझे यूँ तो मिल जाते हैं मेहरबाँ
फिर भी हर मोड़ पर
पूछता है ये दिल
वो जो इक छाँव थी
खो गई है कहाँ।

●●●

ढलता सूरज, फैला जंगल, रस्ता गुम
हमसे पूछो कैसा आलम होता है

शबाना

ये आए दिन के हंगामे
ये जब देखो सफ़र करना
यहाँ जाना - वहाँ जाना
इसे मिलना उसे मिलना
हमारे सारे लम्हे
ऐसे लगते हैं
कि जैसे ट्रेन के चलने से पहले
रेलवे स्टेशनों पर
जल्दी-जल्दी अपने डब्बे ढूँढते
कोई मुसाफ़िर हों
जिन्हें कब सांस भी लेने की मुह्लत है
कभी लगता है
तुमको मुझसे मुझको तुमसे मिलने का
ख़याल आए
कहाँ इतनी भी फ़ुर्सत है

मगर जब संगदिल दुनिया मेरा दिल तोड़ती है तो
कोई उम्मीद चलते चलते

ग़ज़ल

दस्तबरदार[1] अगर आप ग़ज़ब[2] से हो जाएँ
हर सितम भूलके हम आपके अब से हो जाएँ

1. विरक्त
2. अत्याचार

चौदहवीं शब[3] है तो खिड़की के गिरा दो पर्दे
कौन जाने कि वो नाराज़ ही शब से हो जाएँ

3. पूरे चाँद की रात

एक ख़ुश्बू की तरह फैलते हैं महफ़िल में
ऐसे अल्फ़ाज़[4] अदा[5] जो तिरे लब से हो जाएँ

4. शब्द, 5. कथित

न कोई इश्क़ है बाक़ी न कोई परचम[1] है
लोग दीवाने भला किसके सबब[2] से हो जाएँ

1. झंडा
2. कारण

बाँध लो हाथ कि फैलें न किसी के आगे
सी लो ये लब कि कहीं वा[3] न तलब[4] से हो जाएँ

3. खुल जाना
4. ज़रूरत

बात तो छेड़ मिरे दिल, कोई क़िस्सा तो सुना
क्या अजब उनके भी जज़्बात[5] अजब से हो जाएँ

5. भावनाएँ

•••

कच्ची बस्ती

गलियाँ
और गलियों में गलियाँ
छोटे घर
नीचे दरवाज़े
टाट के पर्दे
मैली बदरंगी दीवारें
दीवारों से सर टकराती
कोई गाली
गलियों के सीने पर बहती
गंदी नाली
गलियों के माथे पर बहता
आवाज़ों का गंदा नाला

आवाज़ों की भीड़ बहुत है
इंसानों की भीड़ बहुत है
कड़वे और कसीले चेहरे
बदहाली के ज़हर से हैं ज़हरीले चेहरे
बीमारी से पीले चेहरे

मेरी साँसों में जिसकी ख़ुश्बू थी
दिल के गुलदान से वो गुल भी गया

एक शायर दोस्त से

घर में बैठे हुए क्या लिखते हो
बाहर निकलो
देखो क्या हाल है दुनिया का
ये क्या आलम[1] है
सूनी आँखें हैं
सभी ख़ुशियों से ख़ाली जैसे
आओ इन आँखों में ख़ुशियों की चमक हम लिख दें
ये जो माथे हैं
उदासी की लकीरों के तले[2]
आओ इन माथों पे क़िस्मत की दमक हम लिख दें
चेहरों से गहरी ये मायूसी[3] मिटाके
आओ
इनपे उम्मीद की इक उजली किरन हम लिख दें
दूर तक जो हमें वीराने नज़र आते हैं

1. दशा
2. नीचे
3. निराशा

देखनेवाला था कल उस का तपाक[1]
फिर से वो ग़ैर हो गया जैसे

1. गर्मजोशी

कुछ बिछड़ने के भी तरीक़े हैं
ख़ैर, जाने दो जो गया जैसे

•••

देखकर तुमको ये ख़याल आया
क्या किसी ने तुम्हें छुआ होगा

ग़ज़ल

अभी ज़मीर[1] में थोड़ी-सी जान बाक़ी है
अभी हमारा कोई इम्तेहान बाक़ी है

हमारे घर को तो उजड़े हुए ज़माना हुआ
मगर सुना है अभी वो मकान बाक़ी है

हमारी उनसे जो थी गुफ़्तगू[2], वो ख़त्म हुई
मगर सुकूत-सा[3] कुछ दरमियान बाक़ी है

1. अंतरात्मा
2. बातचीत
3. नि:शब्दता/ख़ामोशी

कि जो था ख़ाक हुआ इक दुकान बाक़ी है

वो ज़ख़्म भर गया अर्सा हुआ मगर अबतक
ज़रा-सा दर्द ज़रा-सा निशान बाक़ी है

ज़रा-सी बात जो फैली तो दास्तान बनी
वो बात ख़त्म हुई दास्तान बाक़ी है

अब आया तीर चलाने का फ़न[1] तो क्या आया
हमारे हाथ में ख़ाली कमान बाक़ी है

1. कला

●●●

ग़ज़ल

ये मुझसे पूछते हैं चारागर[1] क्यों
कि तू ज़िंदा तो है अब तक, मगर क्यों

जो रस्ता छोड़के मैं जा रहा हूँ
उसी रस्ते पे जाती है नज़र क्यों

थकन से चूर पास आया था इसके
गिरा सोते में मुझपर ये शजर[2] क्यों

1. चिकित्सक
2. पेड़

सुनाएँगे कभी फ़ुर्सत में तुम को
कि हम बरसों रहे हैं दरबदर क्यों

यहाँ भी सब हैं बेगाना ही मुझसे
कहूँ मैं क्या कि याद आया है घर क्यों

मैं ख़ुश रहता अगर समझा न होता
ये दुनिया है तो मैं हूँ दीदावर[1] क्यों

1. पारखी

●●●

ग़ज़ल

ज़िंदगी की आँधी में ज़ह्न का शजर[1] तन्हा
तुमसे कुछ सहारा था, आज हूँ मगर तन्हा

1. पेड़

ज़ख़्म-ख़ुर्दा[2] लम्हों को मसलेहत[3] सँभाले है
अनगिनत मरीज़ों में एक चारागर[4] तन्हा

2. घायल
3. नीति
4. चिकित्सक

बूँद जब थी बादल में ज़िंदगी थी हलचल में
क़ैद अब सदफ़[5] में है बनके है गुहर[6] तन्हा

5. सीप
6. मोती

तुम फ़ुज़ूल[1] बातों का दिल पे बोझ मत लेना
हम तो ख़ैर कर लेंगे ज़िंदगी बसर तन्हा

इक खिलौना जोगी से खो गया था बचपन में
ढूँढता फिरा उसको वो नगर-नगर तन्हा

झुटपुटे का आलम[2] है जाने कौन आदम है
इक लहद[3] पे रोता है मुँह को ढाँपकर तन्हा

1. व्यर्थ
2. समय
3. क़ब्र

● ● ●

ग़ज़ल

वो ज़माना गुज़र गया कब का
था जो दीवाना मर गया कब का

ढूँढता था जो इक नई दुनिया
लौटके अपने घर गया कब का

वो जो लाया था हमको दरिया तक
पार अकेले उतर गया कब का

उसका जो हाल है वही जाने
अपना तो ज़ख़्म भर गया कब का

ख़्वाब-दर-ख़्वाब था जो शीराज़ा[1]
अब कहाँ है, बिखर गया कब का

●●●

चाँदनी के लिए मरा सूरज
क्या कहें कैसी मात खाई है

1. ताना बाना

ग़ज़ल

ये दुनिया तुमको रास आए तो कहना
न सर पत्थर से टकराए तो कहना

ये गुल काग़ज़ हैं, ये ज़ेवर हैं पीतल
समझ में जब ये आ जाए तो कहना

बहुत ख़ुश हो कि उसने कुछ कहा है
न कहकर वो मुकर जाए तो कहना

ग़ज़ल

ये दुनिया तुमको रास आए तो कहना
न सर पत्थर से टकराए तो कहना

ये गुल काग़ज़ हैं, ये ज़ेवर हैं पीतल
समझ में जब ये आ जाए तो कहना

बहुत ख़ुश हो कि उसने कुछ कहा है
न कहकर वो मुकर जाए तो कहना

कभी दिल ग़म से घबराए

धुआँ जो कुछ घरों से उठ रहा है
न पूरे शहर पर छाए तो कहना

●●●

देखी है चाँद-चेहरों की भी चाँदनी मगर
उस चेहरे पर अजब है ज़हानत[1] की रौशनी

1. समझदारी

ये इक सवाल
उसके ज़ह्नो-दिल में
खटक रहा है
ये वक़्त क्या है?

●●●

हमारे शौक़ की ये इन्तहा थी
क़दम रक्खा कि मज़िल रास्ता थी

अजीब आदमी था वो

(कैफ़ी साहब)

अजीब आदमी था वो
मुहब्बतों का गीत था
बग़ावतों का राग था
कभी वो सिर्फ़ फूल था
कभी वो सिर्फ़ आग था
अजीब आदमी था वो

वो मुफ़लिसों[1] से कहता था
कि दिन बदल भी सकते हैं
वो जाबिरों[2] से कहता था
तुम्हारे सर पे सोने के जो ताज हैं
कभी पिघल भी सकते हैं

1. निर्धन
2. अत्याचारी

वो बंदिशों[1] से कहता था
मैं तुमको तोड़ सकता हूँ
सहूलतों से कहता था
मैं तुमको छोड़ सकता हूँ
हवाओं से वो कहता था
मैं तुमको मोड़ सकता हूँ

वो ख़्वाब से ये कहता था
कि तुझको सच करूँगा मैं
वो आरज़ू से कहता था
मैं तेरा हमसफ़र हूँ
तेरे साथ ही चलूँगा मैं
तू चाहे जितनी दूर भी बना ले अपनी मंज़िलें
कभी नहीं थकूँगा मैं

वो ज़िंदगी से कहता था
कि तुझको मैं सजाऊँगा
तू मुझसे चाँद माँग ले
मैं चाँद लेके आऊँगा

वो आदमी से कहता था
कि आदमी से प्यार कर
उजड़ रही है ये ज़मीं
कुछ इसका अब सिंघार कर

1. बंधनों

अजनबी हमको ये दीवार ये दर[1] कहते हैं
पर कहाँ जाएँ चलो इसको ही घर कहते हैं

1. दरवाज़ा

ग़ज़ल

आज मैंने अपना फिर सौदा किया
और फिर मैं दूर से देखा किया

ज़िंदगी भर मेरे काम आए उसूल
एक-इक करके उन्हें बेचा किया

बँध गई थी दिल में कुछ उम्मीद-सी
ख़ैर, तुमने जो किया अच्छा किया

मेले

बाप की उँगली थामे
इक नन्हा-सा बच्चा
पहले-पहल मेले में गया तो
अपनी भोली-भाली
कंचों जैसी आँखों से
इक दुनिया देखी
ये क्या है और वो क्या है
सब उसने पूछा
बाप ने झुककर
कितनी सारी चीज़ों और खेलों का
उसको नाम बताया
नट का
बाज़ीगर का
जादूगर का
उसको काम बताया
फिर वो घर की जानिब लौटे
गोद के झूले में